प्राक्कथन

प्राक्कथन

बी.ए. की उपाधि के अध्ययन-काल में मैं उपन्यास विधा के प्रति अधिक आकर्षित हुआ। उस समय पाठ्यक्रम में राजेंद्र यादव का लघु उपन्यास 'अन देखे अनजान पुल' अध्ययनार्थ था। कक्षा में इस उपन्यास का कथानक सुनकर मन अधिक बेचैन हुआ। मैंने उसी दिन राजेंद्र यादव जी का वह उपन्यास आद्यंत पढ़ा। उपन्यास में चित्रित कस्बाई तथा महानगरीय जन-जीवन का पर्याप्त चित्रण तथा कुरूप निन्नी की मनोदशा का सूक्ष्म चित्रण पढ़कर मैं प्रभावित हुआ।

उस समय मेरा मन-मस्तिष्क पुन: पुन: विचार कर रहा था - क्या एक पुरुष रचनाकार नारी मनोदशा का इतनी सूक्ष्मता से चित्रण कर सकता है? यदि यह सच है तो नारी रचनाकार कितनी सूक्ष्मता तथा सफलता से नारी मनोविज्ञान को उद्घाटित कर सकती है? इस विचार को विराम तब मिला जब मेरे आदरणीय गुरुवर्य जी ने नारी उपन्यासकारों के नाम और उनकी रचनाओं की लंबी सूची मुझे बता दी थी ...।

ज़ब एम्.फिल. के लिए शोध-विषय चयन का सिलसिला शुरु हुआ तब मैंने अपने लिए उपलब्धि सिद्ध हुए पूजनीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया। आपने मेरी रुचि देखकर अनेक सशक्त महिला उपन्यासकारों के नाम सुझाएँ। साथ ही अब तक जिनके उपन्यास-साहित्य पर कहीं शोध-कार्य नहीं हुआ है, ऐसी हिंदी की सशक्त रचनाकार मृणाल पांडे का नाम बताया। मृणाल पांडे का नाम सुनते ही मुझे दूरदर्शन के लिए हिंदी समाचार का प्रस्तुतीकरण करनेवाली मृणाल पांडे की छवी याद आयी। जिन्हें मैं दूरदर्शन पर देखता तथा सुनता था उनके ही उपन्यास-साहित्य पर अनुसंधान करने का सौभाग्य मुझे मिलनेवाला है, इस विचार से ही मन उल्हासित और उतना ही सचेत हुआ। आपने मृणाल पांडे जी का उपन्यास-साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की सलाह दी और साथ ही कुछ प्रश्न भी दिए।

मैंने मृणाल पांडे के 'पटरंगपुर पुराण' तथा 'विरुद्ध' उपन्यास पढ़े। 'पटरंगपुर पुराण' में चित्रित पहाड़ी जन-जीवन पढ़ते समय मुझे विगत कई वर्षों के आपात् से पीड़ित अपनी जन्मभूमि की याद आयी। पटरंगपुर कस्बे की सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और पारिवारिक

स्थिति तथा पात्रों के चित्रण से मैं प्रभावित हुआ। 'विरुद्ध' उपन्यास में चित्रित मैदानी तथा पहाड़ी जन-जीवन का चित्रण अविश्वसनीय नहीं बल्कि परिचायक लगा।

मृणाल पांडे जी के ये दो उपन्यास पढ़ने के उपरान्त मैं दिए गए प्रश्नों के उत्तर लेकर श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से मिला। आपने दर्ज किए गए उत्तर पर संतुष्टि प्रकट की तथा विचार-विमर्श के पश्चात लघु शोध-प्रबंध के लिए "मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित जन-जीवन का अनुशीलन" विषय का चयन हुआ।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सम्मुख निम्नांकित प्रश्न उजागर हुए थे -

1. जिन्हें मैं केवल दूरदर्शन पर देखता एवं सुनता था उस मृणाल पांडे जी की अब तक की जीवन-यात्रा किन-किन पड़ावों से गुजरी है?
2. मृणाल पांडे जी के औपन्यासिक साहित्य की मूल संवेदना तथा केंद्रीय तत्त्व क्या है?
3. मृणाल पांडे जी के उपन्यासों में कौन-कौन से जन-जीवन का चित्रण हुआ है?
4. विवेच्य उपन्यासों में जन-जीवन के किन अंगों को चित्रित किया गया है?
5. मृणाल पांडे जी के उपन्यासों में जन-जीवन के किन समस्याओं का चित्रण हुआ है?
6. मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा पात्रों का जीवन कैसा रहा है? सामान्य और सर्वहारा लोगों के जीवन में क्या अंतर है?
7. मृणाल पांडे जी के उपन्यासों का प्रतिपाद्य क्या है?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरान्त उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें आधार मानकर निकाले गए निष्कर्ष उपसंहार में दिए हैं। लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति को ध्यान में रखकर मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके शोध विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है "मृणाल पांडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"। इस अध्याय के अंतर्गत मृणाल पांडे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को तलाशने का प्रयास किया है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संक्षिप्त परिचय में उनकी जन्म-तिथि तथा जन्म-स्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, मित्र-मंडली और पत्रकार तथा

निवेदक रूप आदि बातों का विवेचन किया है। साथ-साथ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की विशेषताओं, जैसे - बहुभाषी, कुशाग्र बुद्धिमत्ता, साहसी, स्वाभिमानी, कला-प्रेमी, यात्री, मातृभूमि से प्रेम, सामाजिक सरोकार से ओत-प्रोत जीवन, युवाओं की प्रेरणा स्रोत, नारी के दयनीय दशा की ज्ञाता और संपादिका एवं संस्थापिका आदि का परिचय दिया है। उनके कृतित्व में उनके हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्य सृजन के साथ-साथ दूरदर्शन के उन धारावाहिक कार्यक्रमों की नामावली भी दी है, जिसके कई भागों का लेखन स्वयं मृणाल पांडे जी ने किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - ''मृणाल पांडे के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन''। इस अध्याय में मृणाल पांडे के उपन्यासों का विषयगत विवेचन करके संक्षेप में परिचय दिया है। इसमें प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रत्येक उपन्यास को लेकर कथावस्तु के मूल सूत्र तथा विषय, उपन्यास के पात्र, भाषा, संवाद, शैली तथा उद्देश्य आदि बातों का विवेचन किया है। प्रत्येक उपन्यास के विवेचन के पश्चात संक्षेप में निष्कर्ष देकर अध्याय के अंत में मिले तथ्यों के आधार पर समन्वित निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पहाड़ी जन-जीवन''। इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पहाड़ी जन-जीवन को आधार मानकर पहाड़ी जन-जीवन की स्थिति और गति संबंधी पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। पहाड़ी जन-जीवन की सांस्कृतिक स्थिति का विवेचन-विश्लेषण विस्तार से करते समय पहाड़ी रूढ़ी-प्रथा-परंपरा, लोकविश्वास, वस्त्राभूषण, खान-पान, कला-खेल-मनोरंजन, त्यौहार तथा उत्सव, विभिन्न संस्कार और वर्ण-व्यवस्था आदि का विवेचन किया है। पारिवारिक स्थिति का विवेचन करते हुए पहाड़ी जन-जीवन के परिवार में पति-पत्नी, बहू, युवा वर्ग और बूढ़ों की स्थिति का विवेचन-विश्लेषण किया है। तद-उपरान्त पहाड़ी जन-जीवन की शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जन-जीवन''। इस अध्याय के अंतर्गत मैंने महानगर से तात्पर्य, विभिन्न कोशगत अर्थ एवं विद्वानों की धारणा के आधार पर महानगर संकल्पना स्पष्ट की है तथा महानगर के प्राचीन प्रमाप और

आज के प्रमाप का विवेचन-विश्लेषण किया है। तत्पश्चात महानगरीय जन-जीवन के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्षों का विवेचन कर विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त चित्रण के आधार पर महानगरीय समस्याओं का विस्तार से विवेचन-विश्लेषण किया है। जैसे - भ्रष्टाचार की समस्या, राजनयिकों के व्यवहार की समस्या, मनमौजी अफसरशाही की समस्या, थोथेपन की समस्या, मदिरा-पान, वेश्या-गमन, आवास तथा गंदगी की समस्या, अपनों से बिछुड़ने का दर्द, मतलबी रिश्ते की समस्या, असुरक्षा की समस्या और जीवन मूल्यों के टूटन की समस्या आदि। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा वर्ग का जीवन''। इस अध्याय के अंतर्गत सर्वहारा तथा वर्ग शब्द के कोशीय अर्थ, विद्वानों की सर्वहारा-वर्ग संबंधी धारणा तथा भारतीय जन-जीवन में सर्वहारा-वर्ग स्वरूप में होते आए बदलाव का संक्षिप्त विवेचन किया है। इसके बाद विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा वर्ग के पात्रों का परिचय दिया है। तद्उपरान्त इन पात्रों के जीवन चरित को आधार मानकर सर्वहारा वर्ग की विशेषताओं का विवेचन करके उपन्यास में चित्रित सामान्य वर्ग के चित्रण का आधार लेकर सामान्य तथा सर्वहारा वर्ग के जीवन में दृष्टिगोचर हुए साम्य-वैषम्य का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के उपलब्ध तथ्यों को आधार मानकर निकाले निष्कर्षों को दिया गया है। तदउपरान्त परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :-

1. मृणाल पांडे के उपन्यास-साहित्य में चित्रित जन-जीवन को अध्ययन का केंद्रबिंदु मानकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मृणाल पांडे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. मृणाल पांडे के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित जन-जीवन के विविध पहलुओं की

तलाश की है।

4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित पहाड़ी, महानगरीय तथा सर्वहारा वर्ग के जन-जीवन का सूक्ष्मता एवं गहराई से अनुशीलन करते हुए पहाड़ी, महानगरीय, तथा सर्वहारा जीवन की स्थिति और गति को बारीकी से व्याख्यायित किया है।

ऋणनिर्देश :-

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति जिन लोगों की प्रेरणा तथा सहायता से हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध शोध-विषय की मौलिकता के हिमायती, छात्र-प्रिय, सदा उत्साही श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रेरक, आत्मीय एवं कुशल निर्देशन का फल है। आपने विभिन्न व्यस्तताओं में भी समय-समय पर मेरे आशंकित प्रश्नों का समाधान तत्परता एवं आत्मीयता से किया, जिसका फल यह लघु शोध-प्रबंध है।

आपने केवल शोध अध्ययन संबंधी ही नये विचार नहीं सुनवाए बल्कि समय-समय पर अपने प्रोत्कर्ष विचार एवं कृति से जीवन जीने की नयी दृष्टी भी दी। आपकी जीवनचर्या मुझे हमेशा प्रेरित करती रही है। मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति कलम की दो बूँद स्याही से कृतज्ञता प्रकट करने के बदले सहृदय से कृतज्ञता प्रकट करना ही अधिक औचित्यपूर्ण समझता हूँ। मेरा मन आगे भी गुरु ऋण से मुक्त होना नहीं चाहता बल्कि उसमें आबद्ध होना चाहता है।

मैंने जिस विषय पर अनुसंधान कार्य किया है उस औपन्यासिक कृतियों की रचनाकार मृणाल पांडे जी तथा उन्हें मित्र ही नहीं बल्कि बड़ी बहन माननेवाली हिंदी साहित्य की लब्ध प्रतिष्ठित समीक्षक तथा पत्रकार क्षमा शर्मा जी के सहयोग के बिना प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति ही नहीं होगी। मृणाल पांडे जी तथा क्षमा शर्मा जी ने अपनी व्यस्तताओं में भी मुझे यथायोग्य सहयोग दिया। अत: मैं उनके प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूँ।

बुद्धिमान होकर भी आर्थिक विपन्नता के कारण उच्च-शिक्षा से वंचित मेरे

पिताजी और माताजी का अपार कष्ट, स्नेह, कष्ट पर आड़िग विश्वास रखने की मनोभावना तथा संस्कार मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे हैं। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनके कष्ट और यातनाओं को विराम देने के मेरे प्रयत्न को सफलता दे। माता-पिता के साथ-साथ परिवार की जिम्मेदारी निभानेवाले बड़े भाई श्री. युवराज किर्दत तथा बड़ी बहन कु. संगीता किर्दत और भानजी सुदर्शना की प्रेरणा मैं भूल नहीं सकता। मैं आजन्म उनके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहता।

माता-पिता की तरह मुझे आर्थिक तथा मानसिक आधार देनेवाले मेरे मौसेरे भाई श्री रमाकांत किर्दत (दादा) और उनका परिवार, आत्मीय चचेरे भाई श्री अंकुश किर्दत (चेअरमन, जोतिर्लिंग ग्रामीण बिगर शेती सह. पतसंस्था, ढवळेश्वर), श्री विष्णु किर्दत (पुणे), श्री केशव किर्दत (सीकर, राजस्थान), श्री आनंदा किर्दत, श्री मारूती पाटील, श्री नारायण किर्दत, नानाजी श्री मुकिंदा सांवत, मामाजी श्री एकनाथ महाडिक, तानाजी सावंत, श्री दिलीप चव्हाण, जिजाजी श्री शिवाजी जाधव तथा दीदी, जिजाजी सयाजी कदम आदि के आशीर्वचन और प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

अब तक के शिक्षा-जीवन में मुझे गुरूजनों का बड़ा आत्मीय प्यार तथा प्रेरणा मिलती रही है। इनमें प्रमुख रूप से आदरणीय श्रीमती संजीवनी गर्जे तथा उनका परिवार (चिकुर्डे), प्रा. श्रीमती पाटील एम्.टी. (विटा), प्रा. श्री बी.एन्.पाटील (विटा), प्रा. कस्बे डी.ए. (विटा), डॉ.वाय.बी. धुमाळ (कराड), डॉ. के.पी. माळी (कराड), डॉ. निकम एस.व्ही. (कराड), डॉ. पी.एस. पाटील (कोल्हापुर), डॉ. के.पी. शाह (कोल्हापुर), डॉ. आशा मणियार (कोल्हापुर), डॉ. केशव प्रथमवीर (पुणे) आदि गुरूजनों के प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूँ।

पहली कक्षा से अब तक के शिक्षा-जीवन का सहपाठी,मित्र नहीं बल्कि भाई श्री गोरखनाथ किर्दत, अन्य शुभाकांक्षी तथा प्रेरक आदर्श मित्र श्री साताप्पा चव्हाण, मनोहर भंडारे, भाऊसाहेब नवले, हनुमंत शेवाळे, पाटील एस्.बी. (कुमठे), उत्तम थोरात, पंडित बन्ने, सुरेश शिंदे, विजय शिंदे, गोरोबा कुंभार, दादासाहेब डवरी, शिवाजी चवरे, मल्लिकार्जुन चौखंडे, अमर जाधव, बाळासाहेब दास, राजेंद्र जाधवर, श्रीमती सुचीता राऊत, श्री सिद्धनाथ पाटील (पुणे), दयानंद रांजणे, भगवान पवार, बालाजी किर्दत, पांडूरंग शिंदे, विश्राम कारंडे,

दिनेश कारंडे, राजू थोरात, पांडूरंग किर्दत, अशोक मरळे, रामचंद्र किर्दत, दिपक पाटील, रविंद्र सावंत तथा अमोल पाटील और एम.फिल. के साथी और सहेलियों का भी इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: इन सभियों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, जयकर ग्रंथालय, पुणे, न्यू कॉलेज, कोल्हापुर, बळवंत कॉलेज, विटा, सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड से हुई। अत: इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल तथा अन्य सभी कर्मचारियों का और हिंदी विभाग के बाबू अनिल साळोखे और कांबळे मामा तथा छात्रावास कार्यालय के बाबू उत्तम पाटील का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं इन सबका ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले अक्षर टायपिंग के संचालक गिरीधर सावंत और पल्लवी सावंत का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सब के प्रति आभार प्रकट कर मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. संदिप जोतिराम किर्दत)

स्थान : कोल्हापुर।

दिनांक :